Topic 58

अजन्त स्त्रीलिंग ऋकारान्त तथा अन्य अजन्त शब्द

न षट्स्वस्रादिभ्यः।

ङीप्टापौ न स्तः।

'स्वसा तिस्रश्चतस्रश्च ननान्दा दुहिता तथा।
याता मातेति सप्तैते स्वस्रादय उदाहृता:॥

स्वसा, स्वसारौ। माता पितृवत्। शसि – मातृः। धीर्गौवत्। राः पुंवत्। नौर्ग्लौवत्।

षष्, पञ्चन् आदि षट्संज्ञकों और स्वसृ (बहिन) तिसृ (तीन स्त्रियाँ) चतसृ, ननान्दृ, दुहितृ, यातृ तथा मातृ शब्दों से परे 'ङीप्' और 'टाप्' प्रत्यय नहीं होते। उदाहरण के लिए षट्संज्ञकों में नान्तों से परे 'ऋन्नेभ्यो ङीप्' से ङीप् तथा अन्यों से परे 'टाप्' प्राप्त है, किन्तु प्रकृत सूत्र से उसका निषेध हो जाता है। इसी प्रकार स्वसृ आदियों से परे जो ऋकारान्त होने से 'ऋन्नेभ्यो ङीप्' से जो ङीप् प्रत्यय प्राप्त था, उसका प्रकृत सूत्र से निषेध हो जाता है। अतः ये स्त्रीलिंग में जैसे के तैसे प्रयुक्त होते हैं। 'स्वसृ' शब्द के रूप अजन्त पुंलिङ्गान्तर्गत 'धातृ' शब्द के समान और 'मातृ' के रूप 'पितृ' (अजन्त–पुंलिंग) के समान होंगे।